जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

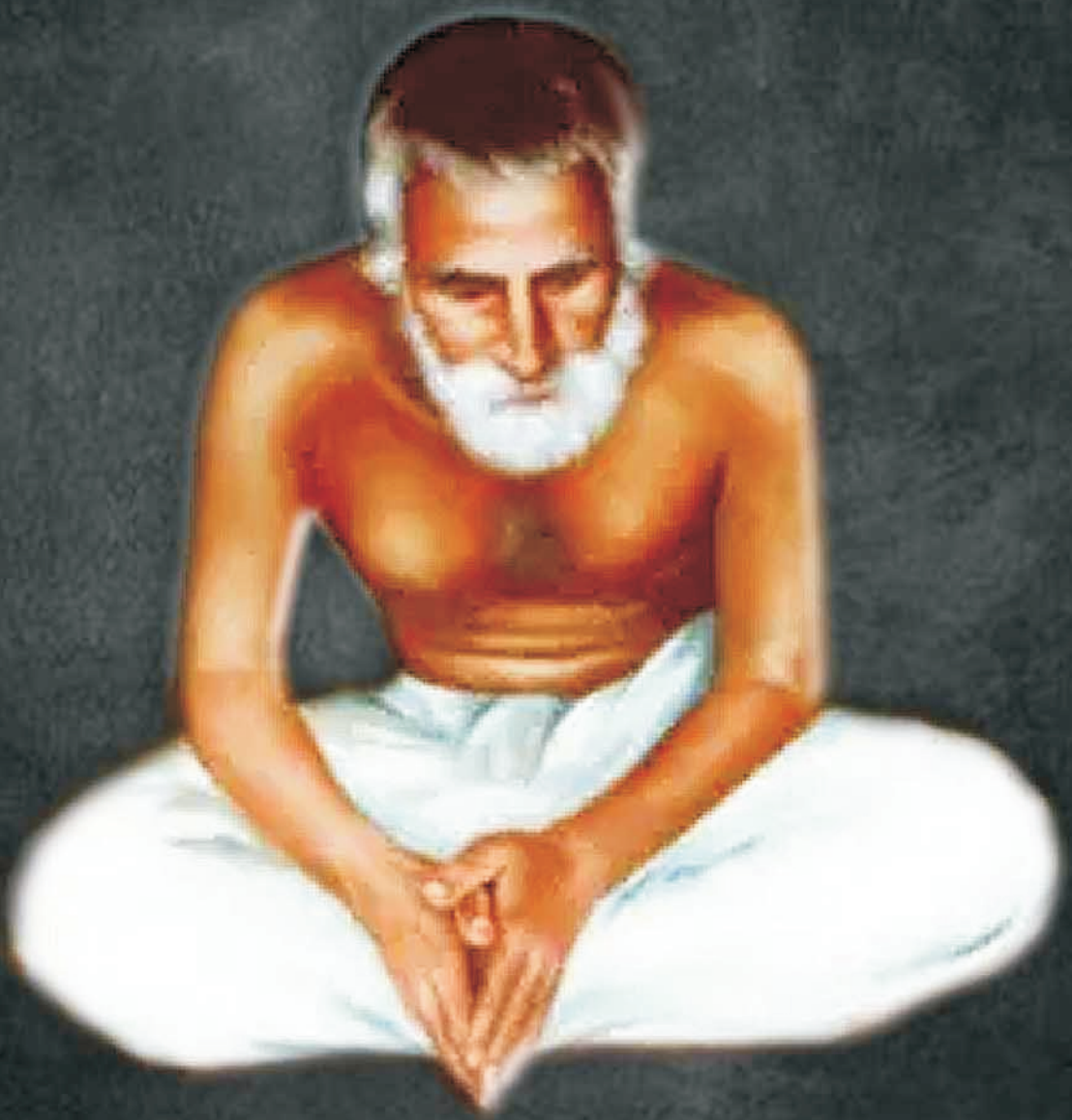

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

अवैध
अनुकरण और पाषण्डता

श्रीगुरु-गौरोगौ जयतः

बाबाजी महाराज की कोठरी के अन्दर अति सामान्य सा स्थान था और कोई वहाँ रह नहीं सकता था। वे दरवाजे अन्दर से बन्ध करके भजन करते थे। उसके साथ ही एक टूटी हुई कोठरी थी। 'म***' नामक एक व्यक्ति ने इस

कोठरी के ऊपर टिन की चादर द्वारा छप्पर बनाकर, बाबाजी महाराज का अनुकरण कर, एक भजन-स्थान का निर्माण कर लिया। बाबाजी महाराज ने एक दिन 'म***' से पूछा, "म ***! तुम कोठरी के अन्दर कपाट बन्द करके निर्जन में रहकर क्या करते हो? और क्या सोचते हो? निरपराध होकर साधुसंग में हरिनाम न कर, एकान्त में, घर में रहने से केवल घर के बरामदे

के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता। तुम क्या बैठे-बैठे घर का बरामदा देख रहे हो और कामिनी, प्रतिष्ठा और धन की चिन्ता कर रहे हो? इस कोठरी में रहने से तुम्हारे ऊपर नाना प्रकार के जंजाल आ जाएँगे।" अन्तर्यामी और बाह्य दृष्टि हीन होने से लीला-अभिनयकारी बाबाजी महाराज ने 'म***' की सारी कपटता के बारे में बोल दिया। बाबाजी महाराज को लोग जो

सब धन और खाने की वस्तुएँ आदि प्रदान कर जाते, 'म***' उक्त कोठरी में भजन करने की छलना से उन्हें किस प्रकार अपना बना लेता है एवं नवद्वीप के विभिन्न स्थानों में जाकर अवैध स्त्री-संग आदि करता है, वह सारा बाबाजी महाराज ने कह दिया। अन्त में 'म***' अत्यन्त बीमार हो गया एवं कुछ दिन बाद उसका एक रिश्तेदार वहाँ आकर उसे संसार में वापिस ले गया। बाबाजी

महाराज ने दिखाया- महाभागवत और गुरु का अनुकरण करने से जीव अपराध के फल से माया के जाल में पतित हो जाता है। धर्म के नाम पर बहिर्मुख व्यक्ति किस प्रकार विषय विष्ठा के गर्त में वास कर रहे हैं, यह उन्होंने आँखों में उंगली लगाकर दिखाया।

श्रीलगुरुदेव